विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८३

नित नवल

रामदेव प्रसाद मण्डल
'झारूदार'

दू कृतिक साहित्यिक आ
स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

जनकाव्य, लोकभाषा, सामाजिक न्याय
आ सम्पादकीय समीक्षा

LXXXIII

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

गजेन्द्र ठाकुर

समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८३ · **LXXXIII**

नित नवल रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८३ · LXXXIII

नित नवल रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'

दू कृतिक साहित्यिक आ स्रोत -समीक्षात्मक अध्ययन

मैथिली जनकाव्य, झारूक रूपक, लोकभाषा आ सामाजिक प्रतिरोध

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

प्रकाशन-विवरण

ग्रन्थ-शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड–८३ · LXXXIII

समीक्षाधीन ग्रन्थ : नित नवल रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’

उपशीर्षक : दू कृतिक साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

मूल समीक्षात्मक अध्ययनक लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

एहि खण्डक सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

प्रकाशकीय संस्था : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादकीय संस्करण : विदेह, २०२७

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur

पुस्तक-विन्यास : ६ × ९ इञ्च; देवनागरी युनिकोड

पाठाधार : उपयोगकर्ताद्वारा प्रदत्त “नित नवल रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’”क DOCX पाण्डुलिपि।

समीक्षाक आधार आ सीमा

ई आलोचना मूल साहित्यिक रचनासभक स्वतंत्र पूर्ण पाठक सम्पूर्ण जाँच नहि, गजेन्द्र ठाकुर द्वारा तैयार उपलब्ध समीक्षात्मक अध्ययनसभक सम्पादकीय पुनर्पाठ अछि। मूल कृतिसभक स्वतंत्र पूर्ण प्रतिक अभावमे कथानक, प्रकाशन-वर्ष, उद्धरण अथवा ऐतिहासिक तथ्यक विशिष्ट दावाकेँ स्वयंसिद्ध प्रमाण नहि मानल गेल अछि। प्रस्तुत अध्ययनक कथन, आलोचकक निर्णय आ एतयक सम्पादकीय विवेचन अलग राखल गेल अछि।

अध्ययनमे ग्रन्थ, व्यक्ति अथवा घटना सम्बन्धी जे विवरण आएल अछि, ताहि पर प्रश्न उठाओल जा सकैत अछि; परन्तु स्वतंत्र अभिलेखीय सत्यापन अगिला संस्करणक कार्य अछि। एहि सीमा स्पष्ट करब साहित्यिक पुनर्पाठक पारदर्शिताक हिस्सा अछि।

विस्तृत विभाग-क्रम

प्रथम विभाग : पुस्तक, पाठाधार आ आलोचनाक परिप्रेक्ष्य

द्वितीय विभाग : क्रमिक कृति-पाठ

- गीतांजलि झारू (कविता/गीत)
- हमरा बिनु जगत सुन्ना छै (कविता/गीत)

तृतीय विभाग : साझा सूत्र आ विधागत प्रश्न

चतुर्थ विभाग : आख्यान, प्रमाण-विवेक आ सम्पादन

पंचम विभाग : समेकित साहित्यिक निर्णय

षष्ठ विभाग : कृति-पत्र आ अनुशीलन-प्रश्न

टिप्पणी : ई विभाग-क्रम अछि; वास्तविक पृष्ठ-संख्या PDF क भीतर पृष्ठांकसँ देखल जा सकैत अछि।

प्रथम विभाग : पुस्तक, पाठाधार आ आलोचनाक परिप्रेक्ष्य

१. 'नित नवल रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'' : साहित्यिक पठनक प्रवेश

गजेन्द्र ठाकुरक एहि संग्रहमे २ साहित्यिक अध्ययन एक साथ उपस्थित अछि। कृतिसभक शीर्षक, विधा आ प्रश्न-विस्तार देखैत बुझाइत अछि जे ई एकरेखीय साहित्यिक परिचय नहि; पाठ, समाज आ कलात्मक रूपक परस्पर सम्बन्धक क्रमिक अध्ययन अछि। संग्रहक केन्द्रीय क्षेत्र मैथिली जनकाव्य, झारूक रूपक, लोकभाषा आ सामाजिक प्रतिरोध अछि।

एहि खण्डक सम्पादकीय प्रस्ताव ई नहि जे मूल लेखकक पक्ष मे अथवा विरुद्ध एक निर्णायक फैसला सुना देल जाए। मुख्य प्रश्न ई अछि जे ठाकुर कोन पुस्तक चुनैत छथि, कोन पाठ-साक्ष्य पर विश्वास करैत छथि, कोन व्याख्या बनबैत छथि, आ अपन निर्णयक सीमा केना चिह्नैत छथि। आलोचना पर आलोचनाक ई दोगुना उत्तरदायित्व अध्ययनकेँ अधिक कठोर बनबैत अछि।

२. मूल कृति, ठाकुरक अध्ययन आ सम्पादकीय पुनर्पाठ

मूल साहित्यिक कृतिक रचनाकार, ओकर समीक्षक गजेन्द्र ठाकुर, आ प्रस्तुत सम्पादकीय समीक्षाक स्तर अलग छथि। जे घटना मूल कृतिक कथा-संसारमे घटैत अछि से कथात्मक तथ्य थिक; जकर व्याख्या ठाकुर करैत छथि से आलोचनात्मक स्थापना थिक; एहि समीक्षाक निर्णय ओहि स्थापनाक प्रमाण-सम्बन्ध आ शिल्पविश्लेषण पर केन्द्रित अछि।

एहि भेदक अभावमे प्रशंसा दोहराएल जा सकैत अछि अथवा मूल पुस्तकक तथ्य पर बिना देखनहि फैसला बनि सकैत अछि। एतय दावाक स्तर स्पष्ट रखबाक पद्धति अपनाओल गेल अछि।

३. साहित्यिक विवेक आ सामाजिक उत्तरदायित्व

लोकजीवन, श्रम, स्त्रीक सामाजिक स्थिति, जाति आ सार्वजनिक संस्था सन विषय साहित्यिक लेखनकेँ तत्काल नैतिक महत्त्व दैत छथि। मुदा रचनाक साहित्यिक मूल्य ओकर

विषय मात्रसँ नहि, भाषा, बिम्ब, दृश्य, कथनकर्ता, काल आ संरचनाक भीतर बनैत अछि। ताहि कारण विषयक सामाजिक गम्भीरता आ कलात्मक सिद्धिक अन्तर राखब आवश्यक अछि।

ठाकुरक अध्ययनसभक जे भाग ई भेद निभबैत अछि ओ अधिक विश्वासयोग्य बनैत अछि। जतय सामान्य सदिच्छा आलोचनाक निष्कर्ष बनि जाइत अछि, ओतय अगिला संशोधन लेल विशेष पाठ-साक्ष्य जोड़ल जाएबाक चाही।

द्वितीय विभाग : उपलब्ध अध्ययनक क्रमिक पठन

४. गीतांजलि झारू' : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र २२ गीत आ १४ शीर्षकबद्ध झारू-रचनाक विन्यास; २०१८ केर प्रथम संस्करण; झारूक रूपक, जाति-धर्म, शासन, न्याय, भूख आ शिक्षाक प्रश्न अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

'गीतांजलि झारू'पर ठाकुरक अध्ययनक सभसँ महत्त्वपूर्ण चयन ई अछि जे 'झारू' केँ मात्र विचित्र शीर्षक अथवा कविक उपनाम नहि, समाजक भीतरक मैल हटेबाक क्रियाशील रूपक मानल गेल अछि। साधारण श्रम-उपकरणक सार्वजनिक भाषामे रूपान्तरण कविताक जनाभिमुखताकेँ मूर्त करैत अछि। मुदा रूपकक सफल व्याख्या लेल ई देखब सेहो जरूरी अछि जे अलग-अलग गीतमे झारू शब्दक काम कतेक बदलैत अछि, कतए ओ नब दृश्य रचैत अछि आ कतए एकहि नैतिक उपदेश दोहरबैत अछि।

अध्ययनमे गीतक २२ आ झारूक १४ रचनाक पृथक् क्रम उपयोगी पाठ-साक्ष्य अछि। पहिल भागक सम्बोधनात्मक गीत आ दोसर भागक संस्थागत सुधारक आदेशक अन्तर पकड़बाक प्रयास उल्लेखनीय अछि। तथापि 'समानता'क घोषणा, जातिक ऐतिहासिक संरचना आ कविताक लयात्मक संगठन तीन पृथक् आलोचनात्मक प्रश्न छथि। शासक, गुरु, धर्म अथवा न्याय पर प्रहारक तीक्ष्णता स्वयं काव्य-सफलता सिद्ध नहि करैत; पुनरुक्ति, विराम, श्रोता-सृष्टि आ विशिष्ट बिम्बक परीक्षण तकर बाद जरूरी अछि।

५. 'गीतांजलि झारू' : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

'मैथिलीक भिखारी ठाकुर' आ 'पहिल असली जनकवि' सन अभिधानपर सावधान दृष्टि एहि अध्ययनक गुण अछि। पहिल उपाधि तुलनात्मक सम्भावनाक संकेत दैत अछि, मुदा विधागत, क्षेत्रीय आ प्रदर्शन-परम्पराक वास्तविक तुलनाक बिना एकर अर्थ अपूर्ण रहैत। दोसर उपाधि साहित्येतिहासक प्रथमत्वक दावा अछि, जकरा लेल व्यापक पूर्ववर्ती साहित्यिक अभिलेख चाही। झारूदारक लोकसम्पर्क आ जनपक्षधरता स्वीकार कएलासँ हुनका अप्रमाणित 'पहिल' घोषित करबाक आवश्यकता नहि।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : गीतक प्रदर्शन-सन्दर्भ, गायक-श्रोता सम्बन्ध आ विशिष्ट पद्यांशक निकटपाठ जोड़लासँ 'जन' शब्दक सामाजिक अर्थ आ कला-सिद्धि कतेक स्पष्ट होयत?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

६. 'हमरा बिनु जगत सुन्ना छै' : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र २०१२ केर संग्रह; झारू आ गेय विस्तार; स्त्रीक परवशता, खेती, भूख, पुलिस, पर्यावरण, धर्म आ सार्वजनिक संवाद अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

'हमरा बिनु जगत सुन्ना छै'क समीक्षामे शीर्षकक 'हमरा' केँ कवि-व्यक्तिक आत्मप्रशंसा नहि, मनुष्यता अथवा सामूहिक जीवनक सम्भावित कथनकर्ता मानब आलोचनात्मक रूपसँ उर्वर अछि। शीर्षकक अनेक अर्थ खुलि सकैत अछि; अतः कविताक वास्तविक सम्बोधन आ प्रत्युत्तरक साथ ओकर परीक्षण आवश्यक अछि। अध्ययनक जनसम्बोधन-विषयक आग्रह एही दिशामे आगाँ बढ़ैत अछि, यद्यपि प्रत्येक पद्यांशक बोलबाक स्थिति एकसमान नहि रहैत।

दहेज, स्त्री-अस्मिता, किसानक श्रम, प्रशासनिक दमन आ साम्प्रदायिक व्यवहारक बीच सम्बन्ध खोजब समीक्षाक व्यापकता अछि। ‘पुलिस सुधारक महाझारू’ सन शीर्षकक प्रसंगमे सामाजिक अन्याय पर वक्तव्य आ सामाजिक संस्थाक कार्यपद्धतिक ठोस चित्रणक अन्तर खुलैत अछि। कविक नैतिक शब्दावली प्रभावकारी भऽ सकैत अछि; मुदा यथार्थक संरचनात्मक विश्लेषण लेल व्यक्ति-दोषक संग संस्था, अधिकार आ निर्णय-प्रक्रिया सेहो देखबाक चाही।

७. ‘हमरा बिनु जगत सुन्ना छै’ : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

ई अध्ययन दोसर संग्रहकेँ पहिलक सहोदर मानि दोहरावमे नहि समेटैत; २०१२ आ २०१८ केर क्रमसँ झारू-रूपकक काव्यात्मक विकासक सम्भावना सामने अबैत अछि। तखनहो विकासक दावा केवल प्रकाशन-वर्षसँ सिद्ध नहि होइत। समान रूपकक अन्तर, लयक परिवर्तन, स्त्री-पात्रक स्वयंस्फूर्त स्वर आ पर्यावरण-चिन्ताक दृश्यात्मक विस्तारक तुलनात्मक सारणी एहि ग्रन्थक अगिला संशोधनमे उपयोगी होयत।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : दू संग्रहक समान विषयपर चयनित पदक शब्द, लय, सम्बोधन आ अन्तिम कथनक प्रत्यक्ष तुलनाक आधारपर ‘विकास’ अथवा ‘पुनरावृत्ति’क निर्णय कोना कएल जाए?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

तृतीय विभाग : साझा सूत्र आ विधागत प्रश्न

८. झारू-रूपक आ श्रमक प्रतिष्ठा

झारू घर-आँगनक श्रमसँ जुड़ल वस्तु अछि; कवि जखन एकरा नैतिक सफाइ आ सामाजिक प्रतिवादक चिह्न बनबैत छथि तँ अदृश्य श्रम सार्वजनिक भाषाक केन्द्रमे अबैत अछि। ठाकुरक

समालोचना ई महत्त्व चिह्नैत अछि। मुदा सफाइ करनिहार वास्तविक श्रमिकक सामाजिक स्थान, जाति-आधारित श्रम-विभाजन आ श्रमक पारिश्रमिकक प्रश्न केवल रूपकसँ स्वतः समाधान नहि पबैत। रूपकक लोकतान्त्रिक वचन आ श्रमक भौतिक यथार्थक बीच ई दूरी जाँचब जरूरी अछि।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

९. लोकभाषा, आवर्तन आ मौखिक प्रदर्शन

प्रायः घोषणात्मक पदक बाद विस्तृत गेय भाग आबैत अछि। एहि संरचनाकेँ पाठक-श्रोता संग सम्भावित संवादक रूपमे पढ़ब उचित अछि; तथापि मंच, स्वरलिपि, गायक आ सामाजिक प्रसारक स्वतंत्र प्रमाण उपलब्ध नहि अछि। मुद्रित पदमे आवर्तनक उपस्थितिसँ वास्तविक लोकप्रदर्शन सिद्ध नहि करबाक सावधानी आलोचनाकेँ बेसी विश्वसनीय बनबैत अछि।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

१०. जाति, धर्म, भूख आ शासनक जुड़ल प्रश्न

दू संग्रहमे अन्याय अलग-अलग नैतिक दोषक रूपमे नाम पबैत अछि। काव्यात्मक प्रतिवादक उपयोगिता एही स्पष्टतामे अछि, मुदा जातिगत वंचना, भुखमरी, भूमि आ प्रशासनिक निर्णय परस्पर जुड़ल संरचनासभ छथि। ठाकुरक विश्लेषण सामाजिक सहानुभूति सँ आगाँ बढ़ि एहि परस्परताक ऐतिहासिक परिमाणकेँ जतबा निर्दिष्ट करत, ओतबा समीक्षाक प्रमाणबल बढ़त।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

११. स्त्रीक स्वर आ जनसम्बोधनक सीमा

स्त्रीक कष्टक उल्लेख आ स्त्रीक अपन शब्दमे बोलबाक अधिकार समान उपलब्धि नहि। घरेलू हिंसा, दहेज अथवा परवशताक वर्णनमे कथनकर्ता के छथि, कोन समाधान निर्धारित करैत छथि आ स्त्री-पात्रक स्वायत्त उत्तर कतए अछि—एहि प्रश्नकेँ समीक्षाक स्थायी कसौटी बनाओल जा सकैत अछि।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

१२. उपाधि, प्रभाव आ साहित्येतिहास

लोकप्रियता, जनसम्पर्क आ कलात्मक उत्कृष्टता एक-दोसराक प्रमाण नहि। ‘पहिल’ वा ‘समकक्ष’ सन शब्द लेल अभिलेखीय सर्वेक्षण, विधागत परिभाषा आ तुलनात्मक निकटपाठ चाही। ठाकुरक विवेकक एहि पक्षकेँ स्पष्ट करब ई खण्डक जरूरी सम्पादकीय योगदान अछि।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

चतुर्थ विभाग : आख्यान, प्रमाण-विवेक आ सम्पादन

१३. आलोचना पर आलोचना : प्रमाणक दू स्तर

एहि खण्डक विषय गजेन्द्र ठाकुर द्वारा लिखल साहित्यिक अध्ययनक सम्पादकीय पुनर्पाठ अछि। समीक्षाधीन कृतिक मूल कथन, ठाकुरक चयनित उद्धरण आ वर्तमान सम्पादकीय निर्णय तीन अलग स्तर मानल गेल अछि। कोनो कथानक-तथ्य वा प्रकाशन-इतिहासक दावा केवल अध्ययनमे लिखल होएबाक कारण स्वतंत्र सत्यापित तथ्य नहि बनैत। ई अन्तर लेखकक श्रमक महत्त्व घटबैत नहि, बल्कि पाठक समक्ष स्रोतक सही स्थिति स्पष्ट करैत अछि।

प्रस्तुत खण्डक संशोधित आलोचना-संस्करणक लेल एहि आधारपर पर्याप्त पाठीय उदाहरण, स्पष्ट संदर्भ आ विरोधी व्याख्याक सम्भावना सँगे राखल जाए। एहन प्रक्रिया मैथिली आलोचनाक सार्वजनिक सत्यापन-क्षमता बढ़बैत अछि।

१४. उद्धरण, पृष्ठ आ सन्दर्भक नीति

समीक्षाक आदर्श सन्दर्भ केवल ग्रन्थनामक सूची नहि, विशिष्ट पाठ-स्थानक साक्ष्य अछि। एकटा तीक्ष्ण निष्कर्षक संग मूल पद्य, प्रसंग वा दृश्य, संस्करण, पृष्ठ आ आलोचकक व्याख्या देखाओल गेल तँ पाठक स्वतन्त्र रूपेँ तर्क जाँचि सकैत छथि। उपलब्ध स्रोत-आधारित ई समीक्षा जे मूल स्वतंत्र कृति नहि देखलनि, तकरा विषयमे प्रत्यक्ष परीक्षणक दावा नहि करैत अछि।

प्रस्तुत खण्डक संशोधित आलोचना-संस्करणक लेल एहि आधारपर पर्याप्त पाठीय उदाहरण, स्पष्ट संदर्भ आ विरोधी व्याख्याक सम्भावना सँगे राखल जाए। एहन प्रक्रिया मैथिली आलोचनाक सार्वजनिक सत्यापन-क्षमता बढ़बैत अछि।

१५. सामाजिक विषय आ कलात्मक रूपक अन्तर

जाति, स्त्री, श्रम, शासन वा पर्यावरण सन गम्भीर प्रश्न साहित्यक आवश्यक विषय भऽ सकैत छथि, मुदा विषयक नैतिक अनिवार्यता अपनहि सफल कविता वा आख्यानक प्रमाण नहि।

ध्वनि, वाक्य, दृष्टिबिन्दु, दृश्य, कथागति, विराम, मौन आ अन्तिम मोड़क परीक्षा साहित्यिक निर्णयकेँ तर्कसंगत बनबैत अछि।

प्रस्तुत खण्डक संशोधित आलोचना-संस्करणक लेल एहि आधारपर पर्याप्त पाठीय उदाहरण, स्पष्ट संदर्भ आ विरोधी व्याख्याक सम्भावना सँगे राखल जाए। एहन प्रक्रिया मैथिली आलोचनाक सार्वजनिक सत्यापन-क्षमता बढ़बैत अछि।

१६. सावधान भाषा आ विवाद्य कथन

जहाँ तथ्यक स्वतंत्र मूल अभिलेख उपलब्ध नहि अछि ओतय 'अध्ययनक अनुसार', 'प्रस्तुत पाठमे', 'सम्भावित', 'पुनः सत्यापन अपेक्षित' सन भाषा अपनाओल गेल अछि। साहित्यिक रूपक, पात्रक कथन आ काल्पनिक घटनाकेँ सामाजिक इतिहासक प्रमाणक रूपमे सीधे स्वीकार कएल नहि गेल अछि।

प्रस्तुत खण्डक संशोधित आलोचना-संस्करणक लेल एहि आधारपर पर्याप्त पाठीय उदाहरण, स्पष्ट संदर्भ आ विरोधी व्याख्याक सम्भावना सँगे राखल जाए। एहन प्रक्रिया मैथिली आलोचनाक सार्वजनिक सत्यापन-क्षमता बढ़बैत अछि।

१७. भाषिक रूप, लोकबोली आ सम्पादन

मैथिलीक विविध वाक्यरूप, बोली आ मिश्रित शब्दावलीकेँ यान्त्रिक शुद्धताक नामपर मिटाएब उचित नहि। मुदा लेखकक उद्धरण, समीक्षकक वाक्य आ प्रकाशकीय सूचना बीच वर्तनी-संगति पाठकीय सुविधा लेल आवश्यक अछि। संशोधित संस्करणमे शीर्षक, व्यक्तिनाम आ ग्रन्थनामक एकरूपता सुरक्षित रखब चाही।

प्रस्तुत खण्डक संशोधित आलोचना-संस्करणक लेल एहि आधारपर पर्याप्त पाठीय उदाहरण, स्पष्ट संदर्भ आ विरोधी व्याख्याक सम्भावना सँगे राखल जाए। एहन प्रक्रिया मैथिली आलोचनाक सार्वजनिक सत्यापन-क्षमता बढ़बैत अछि।

पंचम विभाग : समेकित साहित्यिक निर्णय

१८. सम्पादकीय उपलब्धि : आलोचनात्मक सार्वजनिकता

गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययनसभक प्रमुख उपलब्धि ई अछि जे उपेक्षित वा कम चर्चित रचनाकेँ सामान्य परिचयक स्थानपर प्रश्नोन्मुख पठनक अवसर देल गेल अछि। साहित्यिक पाठक बीच सामाजिक अनुभव, लोकभाषा आ कलात्मक शिल्पक सम्बन्धपर चर्चा एतय सक्रिय होइत अछि।

ई निर्णय उपलब्ध DOCX अध्ययनक आधारपर बनल सम्पादकीय मूल्यांकन अछि; मूल लेखकक समूच प्रकाशित रचनाक सम्पूर्ण निर्णायिक आकलन नहि।

१९. सम्भावित सीमा : कथासार, नैतिक निष्कर्ष आ निकटपाठ

विस्तृत सामाजिक व्याख्या कतहु मूल पद्यांश अथवा दृश्य-संगत विश्लेषणक अपेक्षा अधिक स्थान लैत अछि। नैतिक रूपसँ समुचित निष्कर्ष जँ पाठक रूपात्मक संगतिक बिना राखल जाए तँ आलोचना घोषणामूलक बनि सकैत अछि। एहि कारण प्रत्येक महत्त्वपूर्ण मूल्यनिर्णयक लग एक प्रतिनिधि पाठ-साक्ष्य आ विरोधी पाठ-सम्भावना देब उचित होयत।

ई निर्णय उपलब्ध DOCX अध्ययनक आधारपर बनल सम्पादकीय मूल्यांकन अछि; मूल लेखकक समूच प्रकाशित रचनाक सम्पूर्ण निर्णायिक आकलन नहि।

२०. अगिला संस्करणक संशोधन-कार्यसूची

सम्बन्धित मूल पुस्तकक प्रमाणित प्रति, संस्करण-विवरण, विशिष्ट पृष्ठ, सम्भव भेला पर दोसर साक्ष्य, प्रत्यक्ष उद्धरणक मिलान आ समान विधाक भिन्न कृतिक तुलना अगिला संस्करणमे जोड़ल जाए। विषय-विशेषक सामान्य इतिहास आ स्रोतपुस्तकक कथनकेँ अलग सूचीमे राखल जाए, जाहिसँ पाठक स्वतंत्र जाँच कऽ सकथि।

ई निर्णय उपलब्ध DOCX अध्ययनक आधारपर बनल सम्पादकीय मूल्यांकन अछि; मूल लेखकक समूच प्रकाशित रचनाक सम्पूर्ण निर्णायिक आकलन नहि।

२१. अन्तिम साहित्यिक निर्णय

प्रस्तुत सम्पादकीय पठन न प्रशंसामूलक परिचय अछि, न दोष-सूची। एकर उद्देश्य अध्ययनसभक सही उपलब्धि चिह्नब, उद्धृत साक्ष्यक सीमा स्पष्ट करब आ अधिक कठोर निकटपाठ लेल रास्ता प्रस्तावित करब अछि। विवेकशील मैथिली आलोचनामे सहानुभूति, रूपविचार आ स्रोत-सावधानी तीनू आवश्यक छथि।

ई निर्णय उपलब्ध DOCX अध्ययनक आधारपर बनल सम्पादकीय मूल्यांकन अछि; मूल लेखकक समूच प्रकाशित रचनाक सम्पूर्ण निर्णायक आकलन नहि।

षष्ठ विभाग : कृति-पत्र आ अनुशीलन-प्रश्न

२२. अध्ययन-पत्र : 'गीतांजलि झारू'

विधा : कविता/गीत। पाठ-क्षेत्र : २२ गीत आ १४ शीर्षकबद्ध झारू-रचनाक विन्यास; २०१८ केर प्रथम संस्करण; झारूक रूपक, जाति-धर्म, शासन, न्याय, भूख आ शिक्षाक प्रश्न।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : गीतक प्रदर्शन-सन्दर्भ, गायक-श्रोता सम्बन्ध आ विशिष्ट पद्यांशक निकटपाठ जोड़लासँ 'जन' शब्दक सामाजिक अर्थ आ कला-सिद्धि कतेक स्पष्ट होयत?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

२३. अध्ययन-पत्र : 'हमरा बिनु जगत सुन्ना छै'

विधा : कविता/गीत। पाठ-क्षेत्र : २०१२ केर संग्रह; झारू आ गेय विस्तार; स्त्रीक परवशता, खेती, भूख, पुलिस, पर्यावरण, धर्म आ सार्वजनिक संवाद।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : दू संग्रहक समान विषयपर चयनित पदक शब्द, लय, सम्बोधन आ अन्तिम कथनक प्रत्यक्ष तुलनाक आधारपर 'विकास' अथवा 'पुनरावृत्ति'क निर्णय कोना कएल जाए?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

२४. अन्तिम सम्पादकीय निवेदन

'नित नवल रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार''क अध्ययनसभ साहित्यिक संवादक एक उपयोगी आधार उपलब्ध करबैत छथि। एतय प्रस्तुत समीक्षा ओहि संवादकेँ अधिक कठोर स्रोत-विवेक, शिल्प-परीक्षा आ प्रतिनिधित्वक प्रश्नक संग आगाँ बढ़ेबाक प्रस्ताव रखैत अछि। अध्ययनक महत्त्व मानब आ ओकर सीमाकेँ चिह्नब एक-दोसराक विरोध नहि; ई दुनू समीक्षाक नैतिक अनुशासनक अंग छथि।

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार। विदेह, २०२७।

पाठाधार आ सन्दर्भ

प्राथमिक सम्पादकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, "'नित नवल रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार''", उपयोगकर्ताद्वारा प्रदत्त DOCX पाण्डुलिपि।

समीक्षित कृतिसभक शीर्षक आ विषय-विवरण प्रस्तुत पाठाधारसँ लेल गेल अछि। मूल स्वतंत्र ग्रन्थसभक प्रत्यक्ष परीक्षण आ बाहरी अभिलेख-सत्यापन एहि संस्करणमे शामिल नहि अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८३

एहि खण्डमे गजेन्द्र ठाकुरक ‘नित नवल रामदेव प्रसाद मण्डल झारूदार’क दू विस्तृत अध्ययनक सम्पादकीय आलोचना अछि। ‘गीतांजलि झारू’ आ ‘हमरा बिनु जगत सुन्ना छै’क समीक्षामे जनसम्बोधन, झारू-रूपक, जाति-धर्म, स्त्रीक आवाज, भूख, शिक्षा आ सामाजिक न्याय मुख्य विषय छथि।

काव्यक लय आ बिम्ब, लोकक प्रतिनिधित्व, प्रमाणित साहित्येतिहास आ आलोचनात्मक मूल्यनिर्णयक अन्तर परखि एक संशोधित समीक्षा-पद्धतिक प्रस्ताव देल गेल अछि। मूल कृतिसभक स्वतंत्र पूर्ण पाठ उपलब्ध नहि होयबाक सीमा स्पष्ट राखल गेल अछि।

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

मूल पाठ | विस्तृत आलोचना | सम्पादकीय निर्णय

विदेह

विदेह डिजिटल संग्रह

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur